भूमंडलीकरण के दौर में सांस्कृतिक संक्रमण : 'काशी का अस्सी'

मनोज कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय,
पेरिया, कासरगाड, केरल

शोध सारांश :
भूमंडलीकरण के इस जाल में फसे हुए देश अपनी कला, संस्कृति, सभ्यता आदि को नष्ट करते जा रहे हैं, एक खास तरह की गुलामी उनका पीछा कर रही है । जिसके चंगुल से बच पाना मुश्किल है, भूमंडलीकरण हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में दखलंदाजी कर रहा है । क्योंकि भूमंडलीकरण की पहली शर्त है कि अपनी व्यापार, वस्तुओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों आदि का आदान-प्रदान करना । चूंकि यह प्रभाव अस्सी घाट पर भी हो रहा है । अपितु कहा जाए तो अस्सी घाट पर ही नहीं पूरे भारत पर इसका प्रभाव पड़ रहा है । जो प्रभाव अस्सी की संस्कृति पर पड़ा उसे काशीनाथ सिंह ने देखा समझा और अपने उपन्यास 'काशी का अस्सी' में लिखा है । यहाँ इस उपन्यास का विश्लेषण भूमंडलीकरण के परिपेक्ष्य में किया गया है।

बीज शब्द :
भूमंडलीकरण, अस्सी घाट, संस्कृति, काशी, भारतीयता

भूमंडलीकरण के दौर में सर्वाधिक संक्रमित हुई है; तो वह है, किसी देश की संस्कृति ! किसी देश या स्थान की अपनी स्थानीय संस्कृति होती है, जिसके कारण उस स्थान का अपना महत्त्व होता है। स्थान के सांस्कृतिक महत्त्व से जुड़ी कई घटनाएं होती हैं । वो घटनाएं ऐतिहासिक और किवदंतियों के माध्यम से लोक प्रचलित होती रहती हैं । जिस प्रकार से हरिश्चंद्र घाट, दशाश्वमेध घाट, राजघाट, केदार घाट आदि का नाम आता है और उससे जुड़ी प्राचीन ऐतिहासिक महत्व हैं। वैसे ही अस्सी घाट से जुड़ी प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास है कि गोस्वामी तुलसीदास जी इसी घाट पर बैठकर 'रामचरितमानस' की रचना करते थे और कथा का पाठ भी करते थे । अंततः उन्होने अपने जीवन के अंतिम दिन यहीं पर गुजारे थे, और यहीं से वे मोक्ष को प्राप्त हुए थे । गोस्वामी तुलसीदास के स्वर्गवास के संदर्भ में लोक प्रचलित है कि-

संवत सोलह सौ असी, असी गंग के तीर ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर ।।

यानी यह वही अस्सी घाट है, जहां पर गोस्वामी तुलसीदास जी अपने जीवन के अंतिम छण व्यतीत किए थे और स्वर्गवासी हुए थे । अतः इसे वर्तमान में "सुबह–ए-बनारस" के नाम से भी जाना जाता हैं । "अस्सी से लेकर आदिकेशव के बीच बनारस की गंगा पर कुल 64 घाट निर्मित थे, किन्तु अभी हाल ही में नगवा लंका के पास रविदास नामक एक अति सुंदर नया घाट स्थापित हुआ है, जिसे मायावती की सरकार ने बनवाया है ।"[1] आज भी अस्सी घाट कुछ जीर्णोद्धार के उपरांत पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद बना है । यहाँ की संस्कृति को आप आज भी देख सकते हैं, अस्सी घाट की संस्कृति का अपना अलग स्वाद है । उस संस्कृति के स्वाद से ओतप्रोत है यह अस्सी घाट । ई. बी. टेलर जी का मानना है कि– "उन सभी वस्तुओं के समूह को, जिनमें ज्ञान, धार्मिक विश्वास, कला, नैतिक कानून, परम्पराएँ तथा वे अन्य सभी योग्यताएं सम्मिलित होती हैं, जिन्हें कोई मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते सीखता है, संस्कृति कहते हैं ।" यही संस्कृति हमारी पहचान होती है । भारतीयता के लिए काशीनाथ सिंह इसी घाट की महिमा का वर्णन करते हैं, *"सबसे पहले इस मोहल्ले का मुख़्तसार-सा बायोडाटा-कमर में गमछा, कंधे पर लंगोट और बदन पर जनेऊ-यह यूनिफॉर्म है अस्सी का !"*[2] आप अस्सी घाट पर आज भी यह दृश्य देख सकते हैं । यहां की संस्कृति को आप यहां के लोगों के मन-वचन में समाहित रूप में देखेंगे।

एक अल्हडपन यहाँ के लोगों में आपको देखने को मिलेगा। मित्रों को एक विशेष उपाधि से संबोधित करते हुये आप श्रावण करेंगे । मौज-मस्ती से ओतप्रोत यहाँ के प्राणी अपने रंग में रंगे मिलेंगे । "सभी को समान नाम से नामित करने के लिए प्रसिद्ध यह नगरी अपनी अलग पहचान के लिए प्रसिद्ध है । "गुरु" यहां की नागरिकता का "सरनेम" है । न कोई सिंह, न पांडे, न जादो, न राम ! सब गुरु ! जो पैदा भया, वह भी गुरु, जो मरा, वह भी गुरु !"[3] गुरु नाम से पुकारने की एक शैली है । और यह शैली सभी को समान श्रेणी में लाकर खड़ी कर देती है । समता, समानता, बंधुत्व की बात करती है । यह शब्द गुरु । यह संस्कृति है अस्सी की जिस पर बाह्य संस्कृतियों का निरंतर प्रहार हो रहा है । इस प्रहार से यहाँ की संस्कृति को काफी नुकसान हो रहा है । यह दृश्य अस्सी घाट या बनारस का ही नहीं है अपितु पूरे भारत की संस्कृति का है जिस पर भूमंडलीकरण की वजह से बाह्य संस्कृतियों का पुरजोर से प्रहार हो रहा है । जिसके परिणाम स्वरूप अमानवीय संस्कृति का जन्म हो रहा है ।

अस्सी अपने त्योहारों को अपने ढंग से मनाती है । अपनी सांस्कृतिक पहचान के लिए प्रसिद्ध काशी नगरी का अस्सी घाट विदेशीयों के लिए एक अपनी अलग पहचान रखती है । काशीनाथ अस्सी के संस्कृति के बारे में कहते हैं, "तो साहब, जानिए कि भांग अस्सी की संस्कृति है। और जब संस्कृति है तो कोई-न-कोई परंपरा भी जरूर होगी और वह परंपरा है होली का विश्व प्रसिद्ध कवि-सम्मेलन ।"[4] विशेष त्योहारों का अपनी अलग मौज-मस्ती होती है "अस्सी घाट" पर । "अपने अलहड़पन के लिए प्रसिद्ध अस्सी और अस्सी के लोग यहां तो अस्सी किसी भी वी.आई.पी. को पी.आई.जी. (पिग = सूअर) के बराबर भी नहीं समझता, समूचे त्रिकाल और त्रैलोक्य को अपने फोद पर लिए घूमता रहता है - छुट्टा सांड की तरह!"[5] उसे दुनिया जहान की कोई परी प्रवाह नहीं अपनी दुनियां में मस्त रहने वाली काशी नगरी और यह घाट अस्सी है। इस संस्कृति पर बाह्य देशों का प्रभाव पड़ने लगा है। भूमंडलीकरण के उपरांत यहां की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है । बाह्य देश की संस्कृतियां यहां की संस्कृतियों को प्रभावित करने का काम कर रही हैं । अस्सी बनारस का मोहल्ला नहीं है । अस्सी "अष्टाध्यायी" है और बनारस उसका "भाष्य"। पिछले तीस–पैंतीस वर्षों से "पूंजीवाद" के पगलाए अमरीकी यहां आते हैं और चाहते हैं कि दुनिया इसकी "टीका" हो जाए... मगर चाहने से क्या होता है ? दुनिया तो बहुत कुछ चाहती है ।

"अस्सी सिर्फ मुहल्ला नहीं, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के बाद का पूरा भारत है !"[6] आप एक स्थान पर पूरे भारत का स्वरूप देख सकते हैं । किस प्रकार से भूमंडलीकरण और बाजारवाद ने अस्सी की संस्कृति को बदल दिया है । संस्कृति हमारी मौलिक पहचान होती है । जिसमें हम सभी रंगे रहते हैं । रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार, "संस्कृति मानव जीवन में उसी तरह व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन । इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युग-युगांतर में संस्कृति निर्मित होती है।"[7] लेकिन भूमंडलीकरण के उपरांत विदेशी संस्कृतियों का आगमन होने से भारतीय संस्कृति में परिवर्तन व्यापक फलक पर हुआ। भूमंडलीकरण के इस जाल में फंसते हुए देश अपनी कला संस्कृति को नष्ट करने की ओर बढ़ ही रहे हैं -एक खास तरह की गुलामी उनका पीछा कर रही है । जिसके चंगुल में हम फंस रहे हैं, भूमंडलीकरण के द्वारा अपनी वास्तविकता को खोकर यह संभव हुआ है। क्योंकि भूमंडलीकरण की पहली शर्त होती है अपनी व्यापार, सांस्कृतिक गतिविधियों आदि का आदान प्रदान करना है। तो प्रभाव अस्सी घाट पर भी हुआ, अपितु कहा जाए तो अस्सी घाट पर ही नहीं पूरे भारत पर इसका प्रभाव पड़ा । अस्सी की संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा जिसको काशीनाथ जी ने देखा समझा और लिखा है । बाहर देशों से आने वाले सैलानियों के द्वारा जो बदलाव आया है काशीनाथ सिंह रेखांकित करते हैं कि "मित्रों, डॉ. गया सिंह विद्वान भी हैं और बुद्धिमान भी । उन्हें समझते देर नहीं लगी कि यह भारतीय संस्कृति पर हमला है । गांजा-भांग की संस्कृति पर! जब से अस्सी पर अंगरेज-अंगरेजिन आने शुरू हुए हैं तभी से मुहल्ले के लौंडे हेरोइन और ब्राउन शुगर, चरस के लती हो रहे हैं । ये डाल्टनगंज के नहीं, अस्सी के ही हैं ।"[8] विदेशियों के आगमन से उनकी संस्कृति का आगमन होना स्वाभाविक है क्योंकि एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से मिलने पर भी बहुत-सी चीजों का आदान-प्रदान होता है । यही जब वैश्विक स्तर पर देखा जाता है, तो एक देश का दूसरे देश के मिलाप पर वहां की संस्कृति एक दूसरे देश के साथ मेल-मिलाप हो जाती है।

"अस्सी घाट की अपनी एक अलग संस्कृति है। उसकी अपनी अलग हर्षोल्लास रहा है । रागों, रंगों और रेखाओं और चिड़ियों की चह-चह का अद्भुत कोलाज है, यह घाट! सुबह-शाम यहां पेंसिल और कैनवास लिए चित्रकार भी बैठे मिलेंगे, कैमरा लटकाए छायाकार भी, रियाज मारते गायक-वादक भी, पुजाइया के गीत गाती औरतें भी, धुनी रमाए जोगी भी! बाकी तो मल्लाह हैं, अखाड़िए पहलवान हैं, साधु-सन्यासी हैं, कीर्तनियाँ हैं, भिखमंगे हैं...।"[9] इन सबको लेकर बनता है अस्सी घाट जो आज भी आपको देखने को मिलेगा। अपनी संस्कृति के पहचान के कारण विश्व भर में प्रसिद्ध यह काशी का "अष्टाध्यायी" भारत में अलग छाप छोड़ती है । लेकिन भूमंडलीकरण के कारण आज यह अपनी मौलिकता को खो रही है । बाह्य संस्कृतियों का संक्रमण जोरों शोरों से हो

रहा है । अस्सी घाट की मौलिकता लुप्त हो रही है । "जग्गू मल्लाह के शब्दों में पिछले कुछ वर्षों से यह घाट, अंगरेज-अंगरेजिनों का परममिंट एग्जाई जमीनी हाउसवोट हो गया है । रोज शाम को ढाई–तीन सौ अंग्रेज जोड़ों में या अकेले सीढ़ियों पर बैठते हैं और देर रात तक बैठे रहते हैं ।"[10] यही अंग्रेज अपनी संस्कृति को लाकर यहां की संस्कृति में घोल रहे हैं । जिसके परिणाम स्वरुप यहां के लोगों की मानसिकता में परिवर्तन हो रहा है । पाश्चात्य संस्कृतियां इनको लुभा रही हैं और यह लोलुपता भारतीय संस्कृतियों के अंदर समाहित हो रही है । "जब देखा जाए तो मिलता है कि इन विदेशियों के पास भौतिक सुख-सुविधा की समस्त चीजें उपलब्ध है फिर क्यों ? क्या वे सचमुच उकताए, घबराए, भागे हुए लोग हैं मशीन और मनी से ? ऐशों-आराम की जिंदगी से ? दौलत की दलदल से ?"[11] जब व्यक्ति के पास भौतिक संसाधन उपलब्ध होते हैं तो भी वह सुखी नहीं हो सकता क्योंकि सुख के लिए मानसिक सुख का होना जरूरी होता है, तब व्यक्ति सुखी होता है । भूमंडलीकरण हमारी जरूरत की चीजें तो दे सकता है, लेकिन सुख नहीं दे सकता । इसलिए उनके पास सब कुछ होने पर भी वे प्रसन्न नहीं रहते हैं । और वे अपनी संस्कृति से उकताए हुए लोग हैं । "क्योंकि अस्सी के अंगरेज-अंगरेजिनों की एक खास उम्र थी-तीस-पैंतीस के करीब ! इंडियन कल्चर, इंडियन म्यूजिक, इंडियन स्कल्पचर, इंडियन डांस, इंडियन देवी-देवता, तंत्र-मंत्र, ध्यान, योग, साधना- ये सब के सब उनके शौक भी हो सकते थे और मजबूरी भी! ज्यादातर अपने मनीआर्डर डालर का इंतजार करते । अस्सी पर एक आदमी के लिए सौ डालर ही कम नहीं थे महीने में । चाहे जैसे रह लो, चाहे जहां खा लो, चाहे जहां सो लो । यहां हजार डालर माने अमीर लेकिन उनके यहां ? क्या इतने में सम्मान के साथ जीना मुमकिन है वहां ?"[12] हम तीसरी दुनिया के देशों में आते हैं, और इसका फायदा पहली दुनिया के देश लेते हैं । हमारे पास वह सब कुछ है, जो उनके पास नहीं है ।

पहली दुनिया के उकताए लोग यहां आते हैं । सांस्कृतिक संक्रमण से हमें संक्रमित करते हैं । इस संक्रामण से प्रभावित बनारस (काशी नगरी) पर कैथरीन अपनी किताब लिखती हैं और अपने आंकड़े सभी को बताते हुए कहती हैं सहोदर जी, आंकड़े हैं मेरे पास राँड़ो, साड़ों और सन्यासियों के । मैं बता सकती हूँ कि पिछले पाँच सालों में ही इतना अंतर आया है इनकी संख्या में ? बुरा न मानें तो मैं कहना चाहती हूं कि "वाराणसी इज डाइंग" बनारस जिसे लोग पढ़ते, सुनाते, जानते थे - मर रहा है आज !"[13] इसमें कोई दो राय नहीं है बनारस की संस्कृति पर खतरा मंडरा रहा है । संस्कृति का परिवर्तन हो रहा है लेकिन ऐसा क्यों हो रहा है यह भी विचारणीय है। इस संदर्भ में उपन्यास के पात्र डॉ. गया सिंह कहते हैं कि "घंटे-भर से सिर हिला रहे हैं आप और वह कह रही है कि बनारस मर रहा है । इसी बनारस में हम भी हैं, आप भी हैं और यह अस्सी भी है, इसी बनारस के लिए सात समंदर पार से दौड़ लगा रहे हैं भो...ड़ी के यह अंगरेज, लेकिन यह कह रही हैं और आप सिर हिला रहे हैं - सिर्फ इसलिए कि पाँच सौ रुपए दिहाड़ी पर घर बैठे आपको काम चाहिए, एक ऐसा विदेशी किराएदार चाहिए जिसकी खातिरदारी में आपका पूरा परिवार लगा रहे । यह नहीं देख रहे हैं कि यही साले मार रहे हैं बनारस को और कह रहे हैं कि मर रहा है।"[14] सही बात है विदेशियों के आगमन और पेइंग गेस्ट के रूप में अस्सी घाट पर ठहरना, यह प्रक्रिया वहाँ संस्कृति पर गहरा प्रभाव डालता है । भूमंडलीकरण हमें मानसिक रूप से तैयार करता है अपने फायदे के लिए । दूसरों की चार भली-बुरी बातों को सुन लेना चाहिए । प्रत्यक्ष में फायदा हो रहा हो भले अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान ही क्यों न हो । विदेशियों के आगमन से भारतीय संस्कृति पर जो प्रभाव पड़ रहा है । उसे आप बनारस के संस्कृति पर देख सकते हैं । "बनारस तो मर रहा है लेकिन वहां से नहीं जहां के आंकड़े देवी जी दे गई हैं । देवी जी, तुम्हारे पास तो पूरे नगर के हैं लेकिन मेरे पास तो सिर्फ अस्सी के ही हैं । और उन्हीं की बिना पर मैं बता सकता हूं कि सीढ़ियों पर कितने किलो हेरोइन, कितने किलो ब्राउन शुगर, कितने किलो चरस और कितने डिब्बे मार्फिन की खपत हुई है इस बीच ? घाटों पर वियाग्रा, पेनाग्रा और किन-किन चीजों के पाउडर बिक रहे हैं पुड़ियों में ? दो-दो सौ रुपये एक-एक पुड़िया ! और खरीद कौन रहे हैं- बूढ़े ! चोरी- छुपे ! पेंशन की रकम रोटी-दाल में नहीं पुष्टई में जा रही है । और सुनो, गुब्बारे और गुल्ली डंडा की उमर वाले बच्चे घाट और छत और खिड़कियां देख - देखकर जवान हो गए हैं समय से पहले ही ! किस तरह घूरते हैं इसी उम्र में सयानी लड़कियों को कभी देखा है ?"[15] बदलती संस्कृतियों का यह आज जीता जागता सबूत है कि किस प्रकार से काशी घाट की संस्कृतिक परंपरा में परिवर्तन हो रहा है । यह परिवर्तन बाहर से आने वाले विदेशियों के कारण हो रहा है । वह अपनी अमानवीय संस्कृतियों का प्रसार कर रहें हैं । हम भारतीय बाह्य संस्कृति के प्रभाव में जल्दी ही संक्रमित हो जाते हैं ।

संदर्भ:

1. डॉ तुलसीराम, मर्णिकर्णिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -11
2. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -11
3. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -12
4. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -19
5. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -76
6. सिंह, काशीनाथ, लेखक की छेड़छाड़, किताब घर, नई दिल्ली, पृ -150
7. http://bharatdiscovery.org/indiya
8. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -81
9. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -98
10. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -99
11. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -105
12. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -106
13. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -110
14. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -110
15. सिंह, काशीनाथ, काशी का अस्सी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं -111